वैदिक काल

इस काल का प्रारम्भ आदि काल से 1000 ईसा पूर्व तक माना जाता है। इस काल में हिन्दू धर्म के चारों वेदों की रचना हुई है, इसलिये इसे वैदिक काल कहा गया है। पूरा एक वेद सामवेद संगीत युक्त है। उसके मन्त्रों का पाठ संगीतमय होता रहा है। आज भी इसका कुछ अंश सुनने को मिल जाता है।

Scanned with CamScanner

'सामगायन' में केवल 3 स्वर प्रयोग किये जाते थे, जिनका नाम क्रमशः स्वरित, उदात्त और अनुदात्त था। उदात्त का अर्थ ऊँचा और अनुदात्त का अर्थ नीचा स्वर है, किन्तु 'स्वरित' के अर्थ में मतभेद रहा है। कहीं इसे उदात्त से ऊँचा और कहीं अनुदात्त से नीचे का स्वर माना गया है। इसका अर्थ जो भी माना गया हो, किन्तु उस समय स्वरों की संख्या तीन होने के विषय में कोई मतभेद नहीं है। उदात्त में गंधार, अनुदात्त को ऋषभ और स्वरित को षड़ज माना गया है। 'नारदीय शिक्षा' और 'बृहद्देशी' में केवल 3 स्वरों का उल्लेख मिलता है।

ऋक् प्रातिसाख्य ग्रन्थ (400 ईसा पूर्व) में सर्वप्रथम बार 4 स्वरों का वर्णन मिलता है। इसके बाद स्वरों की सं० 4 से 5 और अंत में 7 हुई। वैदिक काल में ही 7 स्वर विकसित हो चुके थे। 'मांडूकि शिक्षा' की यह पंक्ति इसका प्रमाण है, :-

'सप्तस्वरस्य गीयन्तेसामभिः सामगैर्बुधैः'।

Scanned with CamScanner

केवल इतना ही नहीं, ग्रामों का भी जन्म हो चुका था। इस काल के अन्य ग्रंथों में यत्र-तत्र अनेक वाद्यों का भी उल्लेख मिलता है, जैसे दुदुम्भी, भूदुदुम्भी, वानस्पति, कांड-वीणा, वारण्यम, तूणव, बाकुर आदि। इन सबसे यह ~~सिद्ध हो~~ सिद्ध होता है कि वैदिक काल में ही संगीत का अधिक प्रचार हो चुका था, और संगीत साधना बहुत ऊँची उठ चुकी थी।

Scanned with CamScanner